।। श्रीः ।।

चौखम्बा सुरभारती ग्रन्थमाला
504

श्रीमद्भट्टोजिदीक्षितप्रणीता

वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी

'श्रीधरमुखोल्लासिनी' हिन्दी व्याख्या-समन्वित

दशगणी–भ्वादि से चुरादि तक

प्रत्येक सूत्रों में पद-प्रदर्शन, समास, अनुवृत्तिक्रम, सूत्रार्थ,
भाष्य-मनोरमा-शेखर के अनुसार विस्तृत एवं सुगम व्याख्या, प्रयोगसिद्धि,
सभी धातुओं के प्रत्येक लकारों के रूप, क्लिष्ट रूपों की सिद्धि
एवं धातुपाठ-सहित धातु प्रकरण का विशिष्ट विवेचन

(चतुर्थ भाग)

व्याख्याकारः-
श्रीगोविन्दाचार्य
सम्पादिका
लक्ष्मी शर्मा

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन
वाराणसी

विषयानुक्रमणिका

- सम्पादकीय (i)
- आत्मनिवेदन (iv)
- प्राक्कथन (xi)

विषयानुक्रमः

१. भ्वादयः ००१
२. अदादयः ४५५
३. जुहोत्यादय· ५३१
४. दिवादयः ५६७
५. स्वादयः ६२१
६. तुदादयः ६४१
७. रुधादयः ६८७
८. तनादयः ७०५
९. क्र्यादयः ७११
१०. चुरादयः ७४९

परिशिष्टम्

१. पाणिनीयो धातुपाठः ८८५
२. दशगणीस्थ-सूत्रानुक्रमणिका ९०१
३. दशगणीस्थ-वार्तिकानुक्रमणिका ९०९
४. अकारादिक्रमेण धातुसूची ९११

श्रीनिवासमुक्तिनारायणरामानुजयतिभ्यो नमः

वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी

उत्तरार्धम्

श्रौत्रार्हन्तीचणैर्गुण्यैर्महर्षिभिरहर्दिवम्।
तोष्टूय्यमानोऽप्यगुणो विभुर्विजयतेतराम्॥
पूर्वार्धे कथितास्तुर्यपञ्चमाध्यायवर्तिनः।
प्रत्यया अथ कथ्यन्ते तृतीयाध्यायगोचराः॥

अथ भ्वादयः

तत्रादौ दश लकाराः प्रदर्श्यन्ते। लट्। लिट्। लुट्। लृट्। लेट्। लोट्। लङ्। लिङ्। लुङ्। लृङ्। एषु पञ्चमो लकारश्छन्दोमात्रगोचरः।

अब **वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी** के उत्तरार्ध में प्रवेश कर रहे हैं। उत्तरार्ध में सर्वप्रथम धातु और उनसे विधान किये गये तिङ् प्रत्ययों के योग से बनने वाले रूपों का कथन किया गया है। उसके बाद कृत्संज्ञक प्रत्ययों का कथन है, जो धातुओं से ही विहित होते हैं। धातु-शब्द **डुधाञ् धारणपोषणयोः** इस धातु से उणादिसूत्र **सितनिगमसिसच्यविधाञ्क्रुशिभ्यस्तुन्** से तुन् प्रत्यय होकर बना है।

धातुओं का यह प्रकरण संस्कृतव्याकरण का प्राण है। धातुओं से ही क्रियारूपों और कृदन्तरूपों की रचना होती है। माना यह जाता है कि संस्कृतजगत् में जितने भी शब्द हैं, वे सब धातुओं से ही बने हैं। अतः छात्रों को यदि संस्कृत भाषा का विद्वान् बनना हो तो उन्हें तिङन्तप्रकरण को आत्मसात् कर लेना चाहिये, अर्थात् पूर्णतः कण्ठाग्र कर लेना चाहिये। जिस छात्र की इस प्रकरण में जितनी गति होगी उसका संस्कृत-भाषा पर उतना ही अधिकार होगा। यह प्रकरण अन्य प्रकरणों की अपेक्षा कठिन है फिर भी व्याख्या के माध्यम से सरलता से समझाने का प्रयास किया जा रहा है। वैसे भी हमने व्याख्या की जो शैली अपनायी है, वह वास्तव में लिखने की व्याख्यात्मक शैली नहीं है अपितु ३० वर्षों तक व्याकरण पढ़ाने का जो अनुभव है, जिस प्रकार से छात्र समझ सकते हैं, वैसी ही पाठन शैली अपना कर पढ़ाने की शैली में लिपिबद्ध किया है। अतः